

## पद २८६

(रागः पंचम – तालः(क्रम) चौताल, सुरफाकता, त्रिताल, झंपा)

बन्सी धून सरस राय कोमल लय मधुरी गान खेलत सुरंग फाग  
नंदनंदन जमुनातीरवासी ॥ध्रु.॥ गावे गारी दे दे तारी सब ब्रजनारी  
रंग पिचकारी भरभर मारी । भिजे सब विमल चीर ॥१॥ मानिक  
सुरसावत सावसे संग सुहाय मोटी छोटी गुलाबदानी चपल नयन  
भर अबिर होरी । स्त्री शाम शामर चंडोल डंकार सुन देव आकाश  
छाये । मानिक अति गुनगंभीर ॥२॥